SMT. NASEEM BANO

Smt. Naseem Bano is a master craftswoman of Anokhi Chikankari of Lucknow. She is the only such craftswoman across the world. The Anokhi Chikankari has been created by her father Late Shri Hasan Mirza, the recipient of "National Award" in 1969 by the Hon'ble President of India.

2. Born on 1 December,1962, Smt. Bano received her Graduate degree from the University of Lucknow in the year 1996. She started learning Anokhi Chikankari at the age of 13 from her father Late Shri Hasan Mirza.

3. The uniqueness of this Anokhi Chikankari is that this hand embroidery is done on the one side of fabric and the other side remains plain. It means no embroidery shows on the back side of fabric so it is called Anokhhi Chikankari. It is a super fine embroidery in chikankari. It takes five to ten years of time to make a small product of Anokhi Chikankari. She has made many samples of Anokhi Chikankari like Shahi Anokhi Chikankari kurta, Anokhi Chikan Table cover, Napkins etc. Some of the samples can be seen in the "National Handicraft Museum" Pragati Maidan, New Delhi. Smt. Bano promotes this art world wide such as in America, Chile, Canada, Germany, Italy, Thailand, Oman and Russia etc.

4. Smt. Bano has been giving training of Chikankari to thousands of women to start their own work and earn their livelihood. For this contribution, the State Govt. of Uttar Pradesh gave her State Award in 1985.

5. Smt. Bano received many awards such as First Handicraft week Award by the Department of Industry, UP continuously for five years. For an excellent work of Anokhi Chikankari on Napkins Table cover, she received National Award in 2018. She was honoured with Shilp Guru Award in 2019.

श्रीमती नसीम बानो

श्रीमती नसीम बानो लखनऊ की अनोखी चिकनकारी की माहिर कारीगर हैं। श्रीमती बानो दुनिया भर में अनोखी चिकनकारी की इकलौती कारीगर हैं। अनोखी चिकनकारी की शुरुआत उनके पिता स्वर्गीय श्री हसन मिर्ज़ा ने की थी, जिन्हें 1969 में भारत के माननीय राष्ट्रपति ने "राष्ट्रीय पुरस्कार" प्रदान किया था।

2. 1 दिसंबर 1962 को जन्मी श्रीमती बानो ने वर्ष 1996 में लखनऊ विश्वविद्यालय से स्नातक की डिग्री प्राप्त की। उन्होंने 13 साल की उम्र में अपने पिता स्वर्गीय श्री हसन मिर्जा से अनोखी चिकनकारी सीखना शुरू किया।

3. इस अनोखी चिकनकारी की विशिष्टता यह है कि हाथ की यह कढ़ाई कपड़े के एक तरफ की जाती है और दूसरी तरफ सादा रहती है। इसका मतलब है कि कपड़े के दूसरी तरफ कोई कढ़ाई नहीं दिखती है इसलिए इसे अनोखी चिकनकारी कहा जाता है। चिकनकारी में यह अति उत्कृष्ट कढ़ाई है। अनोखी चिकनकारी का एक छोटा सा उत्पाद बनाने में पांच से दस साल का समय लग जाता है। उन्होंने अनोखी चिकनकारी के कई नमूने बनाए हैं जैसे शाही अनोखी चिकनकारी कुर्ता, अनोखी चिकन टेबल कवर, नैपकिन आदि। कुछ नमूने प्रगति मैदान, नई दिल्ली के "राष्ट्रीय हस्तशिल्प संग्रहालय" में देखे जा सकते हैं। श्रीमती बानो ने इस कला को अमेरिका, चिली, कनाडा, जर्मनी, इटली, थाईलैंड, ओमान और रूस जैसे दुनिया भर के देशों में प्रचारित किया है।

4. श्रीमती बानो हजारों महिलाओं को अपना काम शुरू करने और अपनी रोजी–रोटी कमाने के लिए चिकनकारी की ट्रेनिंग दे रही हैं। इस योगदान के लिए, उत्तर प्रदेश राज्य सरकार ने 1985 में उन्हें स्टेट अवार्ड प्रदान किया। स्टेट अवार्ड मिलने के बाद से वह महिलाओं को प्रशिक्षण दे रही हैं।

5. श्रीमती बानो को लगातार पांच वर्षों तक उद्योग विभाग, उत्तर प्रदेश द्वारा प्रथम हस्तशिल्प सप्ताह पुरस्कार जैसे कई पुरस्कार मिले हैं। नैपकिन, टेबल कवर पर अनोखी चिकनकारी के उत्तम कार्य के लिए 2018 में उन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। 2019 में उन्हें शिल्प गुरु पुरस्कार से सम्मानित किया गया।